IOSR Journal Of Humanities And Social Science (IOSR-JHSS)
Volume 26, Issue 7, Series 1 (July. 2021) 74-77
e-ISSN: 2279-0837, p-ISSN: 2279-0845.
www.iosrjournals.org

भारत के विभिन्न आंदोलनौ में गांधी जी की भूमिका और उनके कार्य

डा. लता व्यास
एसोसिएट प्रोफेसर
चौधरी बल्लू राम गोदारा राजकीय कन्या महाविद्यालय श्री गंगानगर

सारांष

प्रथम विश्वयुद्ध के बाद भारत की राजनीति में महात्मा गाँधी का प्रादुर्भाव हुआ। चम्पारण आंदोलन से उन्होंने अपनी लड़ाई की सफल शुरूआत करते हुए भारतीय जनमानस को सत्य और अहिंसा का नया मंत्र दिया। यह गौरतलब है कि भारत में राष्ट्रीयता के विकास तथा सामाजिक, धार्मिक एवं राजनीतिक दासता से मुक्ति के लिये इस नये मंत्र का प्रयोग बहुत ही सफल रहा। सन् 1920 में महात्मा गाँधी के नेतृत्व ने भारतीय स्वातंत्र्य आंदोलन के इतिहास में एक नया मोड़ लाया। 1920 ई. भारतीय राष्ट्रीय संग्राम के इतिहास का वह सीमा चिन्ह हैं जहाँ से गाँधी युग की शुरूआत होती है। इसी गाँधी युग में हम अंग्रेजों से मुक्त तथा आजाद हुए। गाँधीजी द्वारा प्रर्वतित असहयोग आंदोलन तथा सविनय–अवज्ञा आंदोलन भारतीय स्वांतत्र्य इतिहास के दो प्रमुख आयाम रहे जिसके सहारे हम स्वातंत्र्य आंदोलन की लड़ाई लड़कर जीत सके तथा हमारे भीतर आत्मविश्वास जगा।

महात्मा गाँधी के नेतृत्व में चलाये गए स्वातंत्र्य आंदोलन के दो पहलू थे– (1) निषेद्यात्मक और (2) रचनात्मक। निषेधात्मक कार्यक्रम के अंतर्गत विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार तथा ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ सविनय अवज्ञा आंदोलन आदि कार्य प्रमुख थे। रचनात्मक कार्यक्रमों में नारी उत्थान, खादी एवं ग्रामोद्योग, कांग्रेस संगठन, राष्ट्रीय शिक्षा आदि प्रमुख थे।यह गौरतलब हैं कि महिलाओं ने भी इस कार्यक्रम में अपनी भागीदारी निभाकर गाँधी के सपनों को साकार किया।

शब्द कुंजी

महात्मा, रचनात्मक, आंदोलन, सत्य, सामाजिक न्याय, अतीत, भारत छोड़ो, संग्राम, लड़ाई अहिंसा

1920 में महात्मा गाँधी के नेतृत्व ने भारतीय स्वातंत्र्य आंदोलन के इतिहास में एक नया मोड़ लाया। भारतीय राष्ट्रीय कॉंग्रेस ने रचनात्मक कार्यक्रमों की झड़ी लगा दी जिससे ब्रिटिश साम्राज्य की आर्थिक नीति को धक्का लगा तथा जागरण का एक नया युग प्रारंभ हुआ। कलकत्ता तथा नागपुर कॉंग्रेस प्रस्तावों से भारत की जनता तथा विशेषकर कॉंग्रेस कार्यकर्त्ताओं में नई अर्थ–चेतना का विकास हुआ। विदेशी वस्त्र का बहिष्कार आंदोलन शुरू हुआ तथा खद्दर का उत्पादन होने लगा। महात्मा गाँधी का अहिंसक युद्ध चलता रहा। किंतु परदा तथा अन्य रूढ़ियों की वजह से महिलायें शुरू में इस युद्ध में बहुत कम थी। गाँधीजी का सोचना था कि इस अहिंसक लड़ाई के लिये त्याग तथा सहनशक्ति की आवश्यकता होती है जिसके लिए महिलायें ही अधिक उपयुक्त है। अतः गाँधीजी ने स्त्री समाज को इस अहिंसक लड़ाई की मुख्यधारा से जोड़ना चाहा। गाँधीजी ने महिलाओं की एक–एक समस्या पर अपने विचार व्यक्त किए। गाँधीजी अपने अहिंसक युद्ध में महिलाओं की भूमिका को अधिक महत्व देते थे। इसलिए तो उन्होंने नारी उत्थान के एक–एक पहलू पर अति सूक्ष्म रूप से मार्गदर्शन किया। उन्होंने परदा प्रथा को नारी उत्थान के मार्ग में मुख्य बाधक माना, इस प्रथा के उन्मूलन के लिये आंदोलन किया, बाल विवाह, सती प्रथा आदि कुरीतियों को दूर करने का उपाय किया, विधवा विवाह को प्रोत्साहन दिया तथा स्त्री शिक्षा पर बल दिया।

पर्दा–प्रथा आंदोलन

1928 के जुलाई में पर्दा प्रथा विरोधी सम्मेलन का आह्वान– पचास प्रमुख पुरूष तथा महिलाओं द्वारा किया गया। पूरे प्रान्त की महिलाओं के अद्भूत उत्साह के साथ महिलाओं ने पर्दा का परित्याग कर इस सभा में भाग लिया। गाँधी जी ने इस पर अपनी प्रसन्नता जाहिर की। महिला विद्यापीठ (मगन आश्रम) मझौलिया के कार्यकर्त्ताओं ने अनेक सामाजिक कठिनाईयों को सहकर पर्दा प्रथा को हटाने में अभूतपूर्व योगदान दिया। अधिकतर कॉंग्रेस कार्यकर्त्ताओं का पत्नियाँ सार्वजनिक कार्यों में भाग लेने लगीं।

श्रीमती कमला नेहरू, श्रीमती जानकी देवी तथा कमला देवी चट्टोपध्याय के बिहार दौरे से इस आंदोलन को और

अधिक बल मिला। महिलायें जुलूसों का संगठन करने लगी। महिला संविध सम्मेलन से भी इस आंदोलन को बल मिला।

स्त्री शिक्षा का प्रचार–प्रसार निश्चित रूप से पर्दा उन्मूलन में सहायक बना। द्वितीय विश्वयुद्ध से उत्पन्न आर्थिक दवाब के कारण महिलाओं को पर्दा से बाहर आकर अपनी आजीविका के लिए कार्य करना पड़ा। मुख्य रूप से महिलायें 1920, 1930 तथा 1942 के आंदोलनों में आगे आई। महात्मा गाँधी के व्यक्तित्व का असर महिलाओं पर इतना छा गया था कि सदियों पुरानी पर्दा–प्रथा को तोड़कर वे गाँधी के अहिंसक आंदोलन में कूद गई। 1947 आते–आते अधिकांश महिलाओं ने पर्दा का परित्याग कर दिया किन्तु मुस्लिम महिलाओं पर इसका उतना असर नहीं हुआ।

बाल विवाह आंदोलन

बाल–विवाह की प्रथा भी नारी उत्थान के आड़े आती थी। महात्मा गाँधी ने इस प्रथा का जोरदार विरोध करते हुए इसके विरूद्ध लगातार आंदोलन चलाने का आह्वान किया। गाँधी जी ने इस प्रथा को अधर्म की पराकाष्ठा की संज्ञा दी थी। तथा उसे रोकने की जिम्मेवारी शिक्षित महिलाओं पर दी थी। एनीवेसेंट के प्रयास से कुछ हद तक इसे रोका जा सका। 1925 में श्रीमती सरला देवी की अध्यक्षता में अखिल भारतीय सामाजिक सम्मेलन कलकत्ता में हुआ जिसमें बाल–विवाह के विरूद्ध प्रस्ताव पास हुआ। 1929 में शारदा कानून बना किन्तु यह प्रभावकारी सिद्ध न हो सका। उसमें प्रमुख थी श्रीमती दुर्गा देवी, नन्द किशोर लाल की पत्नी तथा श्रीमती कमला कामिनी देवी आदि। महिला सम्मेलनों में विशेष रूप से बाल–विवाह को रोकने पर बल दिया गया और इस तरह गाँधी जी के आह्वान पर जनमत जागा। परिणामस्वरूप लड़के–लड़कियों की उम्र सीमा धीरे–धीरे बढ़ने लगी। पढ़े–लिखे लोगों में अपनी बौद्धिक स्तर के पत्नियाँ परिचर्या की चाह होने लगी। लड़कियों में शिक्षा का विकास हुआ जो बाल–विवाह को रोकने में सहायक हुई।

विधवा विवाह आंदोलन

विधवा अपने पति के मरने के बाद त्याग का जीवन व्यतीत करती थी। 19वीं शताब्दी के प्रथम चरण में विधवा विवाह देखने को नहीं मिलता हैं किंतु 19वीं शताब्दी के अंतिम चरण तथा 20वीं शताब्दी के प्रथम चरण में विधवा की घटना देखने को मिलती है। यह गौरतलब है कि विधवा विवाह नारी उत्थान के लिए आवश्यक था। गाँधी जी ने विधवाओं, विशेषकर बाल विधवाओं के पुनर्विवाह पर जोर दिया। इस सम्बन्ध में भारतीय राष्ट्रीय सामाजिक संगठन का दूसरा, गया अधिवेशन (1922), अखिल भारतीय हिन्दु महासभा का धार्मिक अधिवेशन (1927), भारतीय महिला सम्मेलन कलकत्ता (1934) आदि के योगदान उल्लेखनीय है। बिहार में राजेन्द्र प्रसाद तथा जगतनारायण लाल आदि ने इस ओर ध्यान दिया। राजेन्द्र प्रसाद विधवा–विवाह के आयोजनों पर जाकर लोगों को उत्साहित करते थे। जगत नारायण लाल ने तो स्वंय विधवा–विवाह पर उदाहरण पेश किया।

सती प्रथा आंदोलन

'सती' शब्द का अर्थ होता है एक ही पुरूष के प्रति नारी की अटूट आस्था और अगाध प्रेम। उस पुरूष के मृत्यु के पश्चात् भी उसी के प्रति स्त्री का अनुराग बनाये रखना सतीत्व माना गया है। भारतीय नारी इस परंपरा को पवित्र मानकर इतिहास के पन्नों में प्राणों की आहूति देती हुई पाई गई है। सती प्रथा एक अमानवीय प्रथा थी। इस प्रथा के रहते नारियों का पुरूषों के बराबर स्थान मिलना असंभव था। राजा राममोहन राय के आंदोलन के फलस्वरूप सती प्रथा कम तो हो गई थी, किन्तु छिटपुट धटनाऐं 1943 तक होती रही। महात्मा गाँधी सती प्रथा के खिलाफ थे। बहरहाल, इसका प्रतिफल था कि गाँधी के सत्याग्रह द्वारा लोगों में और महिला संगठनों में जागृति आई। हालाकि इससे स्त्री शिक्षा का काफी प्रचार हुआ और मूलतः इसी शताब्दी में स्त्री शिक्षा के विकास से सती प्रथा को मिटाने में बहुत बड़ी भूमिका रही।

अंग्रेजो के आर्थिक साम्राज्यवाद को समाप्त करने के लिए गाँधी जी ने खादी के उत्पादन एवं उपयोग को आवश्यक बताया था। उनका मानना था कि खादी के लिये अधिक उपयुक्त महिलायें ही हैं क्योंकि वे शांति की प्रतीक है तथा खादी का ज्ञान चरखा अहिंसक है। स्त्रियों में स्वावलंबन, आजीविका, आर्थिक स्थिति सुधार आदि के रूप में गाँधी जी ने चरखा को अपनाने का मंत्र दिया था। गाँधी जी ने महिलाओं को खादी पहनने तथा सूत कातने का सुझाव दिया था। नागपुर कांग्रेस के बाद स्वदेशी का प्रचार किया गया। 1921 के विजयवाड़ा कांग्रेस के प्रस्ताव के बाद बिहार अपने दो लाख चरखा के लक्ष्य को पूरा करने में लग गया। गया में 21 जिले में 48 भंडार खोले गये। श्रीमती सरला देवी ने छोटानागपुर क्षेत्र में तथा श्रीमती साबित्री देवी पटना, जुमई, मुंगेर एवं झरिया जाकर खादी का प्रचार किया। रामतनुक देवी ने मुजफ्फरपुर जिले में धूम–धूमकर खादी का प्रचार किया। 1922 में श्रीमती लीला सिंह, श्रीमती शारदा कुमारी देवी तथा श्रीमती शफी ने पूरे प्रान्त में धूम–धूमकर स्वदेशी वस्त्र का प्रचार किया।

कांग्रेस संगठन के कार्यो के लिये बिहार में श्रीमती राजकिशोरी देवी, श्रीमती विध्यवासिनी देवी, श्रीमती रामतनुक देवी, श्रीमती सरस्वती देवी, श्रीमती चन्द्रावती देवी प्रभृति महिलाओं का अभूतपूर्व योगदान रहा।

अस्पृष्यता निवारण आंदोलन

19वीं शताब्दी में छूआ–छूत एक ला–इलाज बीमारी की तरह थी। इस अवधि में अछूतों के लिए बहुत से हिंदू मंदिर बंद रहते थे, उनके बच्चे शिक्षा हेतू विद्यालय नहीं जा सकते थे और मृत्यु के पश्चात भी उन्हें समाज में नीचा समझा जाता था। यह गौरतलब हैं कि छूआ–छूत हिन्दू समाज का बहुत बड़ा अभिशाप थी किन्तु शास्त्रों में इसकी मान्यता नहीं थी।

अस्पृश्यता निवारण आंदोलन गाँधीजी के रचनात्मक कार्यक्रम में महत्वपूर्ण स्थान रखता था। गाँधीजी हरिजनों के लिये चन्दा मांगते थे। गाँधी के बिहार दौरे पर महिलाओं ने हरिजन फंड में खुलकर दान दिया। उन दिनों महिलाओं के लिए अस्पृश्यता को तोड़ना एक कठिन कार्य था फिर भी प्रमुख कांग्रेस नेताओं की पत्नियों ने अपने घरों में अस्पृश्यता को मिटा दिया था। कुछ महिलाओं ने तो इस आंदोलन का नेतृत्व भी अपने हाथों में लिया। उनमें प्रमुख थी हजारीबाग की श्रीमती सरस्वती देवी, पटना की श्रीमती चन्द्रावती देवी, गया की श्रीमती प्रियंवदा नंदक्यूलियार। गाँधीजी के अस्पृश्यता–निवारण–आंदोलन का असर बिहारी महिलाओं पर इतना था कि वे पुण्य कार्य समझकर हरिजनों के लिये कुँआ खुदवाती थी।

स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में साम्प्रदायिक तनाव एक अहम सवाल बना हुआ था। किन्तु, बिहारी महिलाएँ साम्प्रदायिक सद्भावना कायम करने में भी पीछे नहीं रहीं। बिहारी महिलाओं ने भी गाँधीजी के आह्वान पर हिन्दु–मुस्लिम एकता हेतू निरन्तर प्रयास किया। हालांकि साम्प्रदायिक एकता अभियान स्त्रियों के उपयुक्त नहीं था फिर भी श्रीमती सरस्वती देवी (हजारीबाग) तथा श्रीमती चन्द्रावती देवी (पटना) सरीखी साहसिक महिलायें निर्भीकतापूर्वक शांति कार्य में लगी रही। महिलायें गाँधी की शांति–यात्रा में जाकर उसे सफल बनाती थी। दंगा पीड़ित भाई–बहनों की सेवा प्रभावतीजी के नेतृत्व में महिला चरखा समिति की बहनों ने बड़ी श्रद्धा तथा लगन से की। शरणार्थी शिविरों में भी महिलाओं ने अपने सक्रिय योगदान से गाँधीजी के सपने को साकार किया।

स्वाधीनता संग्राम के प्रमुख आंदोलन

जिसमें महात्मा गाँधी के द्वारा रचनात्मक कार्यक्रम कों चलाया गया जिस कार्यक्रम को सफल बनाने में जनता ने उपर्युक्त हिस्सा लिया तथा राष्ट्रीय संघर्ष के विभिन्न चरणों में इसने अत्यधिक महत्त्वपूर्ण योगदान अपने नैतिक, साहसिक एवं शारीरिक सहयोगों का इस विद्रोह में प्रदर्शन किया।, लेकिन इसका सौ साल का सफर अनेक गौरवमयी उपलब्धियों से भरा रहा है। दरअसल इसने जहाँ एक तरफ किसान आंदोलन और सामाजिक न्याय की लड़ाई को रास्ता दिखाया है।

सियाराम दल

गुप्त क्रांतिकारी आंदोलन का नेतृत्व सियाराम दल ने किया था। इसके क्रांतिकारी दल के कार्यक्रम की चार बातें मुख्य थीं। धन संचय, शस्त्र संचय, शस्त्र चलाने का प्रशिक्षण और सरकार का प्रतिरोध करने के लिए जनसंगठन बनाना।

असहयोग आंदोलन

दरअसल, 1920 में असहयोग आंदोलन के शुरू करने के पीछे जलियावालां बाग हत्याकांड एकमात्र कारण था। इस हत्याकांड ने गाँधीजी की अन्तरआत्मा को झकझोर कर रख दिया उनको यह महसूस हुआ कि अंग्रेज भारतीयों पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने में सफल हो रहें हैं फिर यही वह समय था जब उन्होंने एक असहयोग आंदोलन शुरू करने का फैसला लिया था। कांग्रेस और उनकी अजेय भावना के समर्थन के साथ, वह उन लोगों को विश्वास दिलाने में सफल रहे जो यह जानते थे कि शांतिपूर्ण तरीके से असहयोग आंदोलन का पालन करना ही स्वतंत्रता प्राप्त करने की कुंजी है। इसके बाद, गाँधीजी ने स्वराज की अवधारणा तैयार की और तब से यह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का मुख्य हिस्सा बन गए। इस आंदोलन ने रफ्तार पकड़ ली और शीघ्र ही लोगों ने अंग्रेजों द्वारा संचालित संस्थानों जैसे स्कूलों, कॉलेजों और सरकारी कार्यालयों का बहिष्कार करना शुरू कर दिया। इस आंदोलन को शीघ्र ही स्वयं गाँधीजी द्वारा समाप्त कर दिया गया था। इसके बाद चौरी–चौरा की घटना हुई जिसमें 23 पुलिस अधिकारी मारे गए थे।

स्वराज दल

चौरा–चौरी कांड से दुखी होकर गांधी जी ने असहयोग आंदोलन को समाप्त कर दिया। फलतः देशबंधु चितरंजन दास, मोतीलाल नेहरू और विट्ठलभाई पटेल ने एक स्वराज दल का गठन किया। बिहार में स्वराज दल का गठन फरवरी

1923 में हुआ लेकिन यह आंदोलन ज्यादा दिन नहीं चला।

किसान आंदोलन और सामाजिक न्याय की लड़ाई का केन्द्र

किसान आंदोलन के साथ ही पिछड़ी और शोषित जातियों ने अपनी गोलबंदी शुरू कर दी और इसे राष्ट्रीय आंदोलन से जोड़ दिया। जल्द ही राष्ट्रीय आंदोलन में पिछड़ी जातियों ने भागीदारी शुरू कर दी। 1920 में पिछड़ी जातियों की गोलबंदी से त्रिवेणी संघ का गठन हुआ। इसमें यादव, कोयरी और कुर्मी जातियों की भूमिका प्रमुख थी, पिछड़ी और शोषित जातियों ने जातीय संगठन बनाकर अपनी ताकत का एहसास करा दिया। त्रिवेणी संघ ने सामाजिक न्याय की जमीन तैयार कर दी। 21 अगस्त 1931 को पिछड़ी जाति के नेता बाबू स्वयंवरदास ने लेजिस्लेटिव कौंसिल में सिविल सर्विस में पिछड़ी जातियों के आरक्षण की मांग उठाते हुए एक प्रस्ताव रखा। ऐसे में कहा जा सकता है कि जन्म के बाद ही बिहार की नियति सामाजिक न्याय की लड़ाई से जुड़ गयी। इस किसान आंदोलन ने सामाजिक और आर्थिक विषमता की लड़ाई को नया आयाम दिया और राष्ट्रीय आंदोलन को किसान आंदोलन से जोड़ दिया। स्वामी सहजानंद ने जमींदारी उन्मूलन की लड़ाई को एक नयी दिशा दी।

संदर्भ

1. यंग इण्डिया –10-04-1930
3. के. सी. व्यास, **द सोषल रेनेसाँ इन इण्डिया**
4. डी. जी. सोंडुलकर, **महात्मा**
6. यंग इण्डिया, 28 जून, 1928
8. द सर्चलाइट, 6 अप्रैल, 1930
9. द सर्चलाइट, 9 नवंबर, 1930
10. द सर्चलाइट, 11 दिसंबर, 1930
13. द सर्चलाइट, 05 दिंसबंर, 1924
14. बैस्ट जियोफरे, **द लाइफ ऑफ एनीवेसेंट**
15. वही 28 अप्रैल, 1937